कालभैरव अष्टकम PDF

॥ कालभैरव अष्टकम ॥

देवराज सेव्यमान पावनांघ्रि पङ्कजं
व्यालयज्ञसूत्रमिन्दुशेखरं कृपाकरम् ।
नारदादि योगिवृन्द वन्दितं दिगंबरं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥ १॥

भानुकोटि भास्वरं भवाब्धितारकं परं
नीलकण्ठमीप्सितार्थदायकं त्रिलोचनम् ।
कालकाल मंबुजाक्ष मक्षशूल मक्षरं
काशिकापुराधिना थकालभैरवं भजे ॥ २॥

शूलटंक पाशदण्ड पाणिमादि कारणं
श्यामकायमादिदेवमक्षरं निरामयम् ।
भीमविक्रमं प्रभुं विचित्र ताण्डव प्रियं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥ ३॥

भुक्ति मुक्ति दायकं प्रशस्तचारु विग्रहं
भक्तवत्सलं स्थितं समस्तलोक विग्रहम् ।
विनिक्वणन्मनोज्ञ हेम किङ्किणी लसत्कटिं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे॥ ४॥

धर्मसेतु पालकं त्वधर्ममार्ग नाशनं
कर्मपाश मोचकं सुशर्म धायकं विभुम् ।
स्वर्णवर्ण शेषपाश शोभितांग मण्डलं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥ ५॥

रत्न पादुका प्रभाभिराम पादयुग्मकं
नित्य मद्वितीयमिष्ट दैवतं निरंजनम् ।
मृत्युदर्प नाशनं करालदंष्ट्र मोक्षणं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥ ६॥

pdfinbox.com

अट्टहास भिन्न पद्मजाण्डकोश संततिं
दृष्टिपात्त नष्टपाप जालमुग्र शासनम् ।
अष्टसिद्धि दायकं कपालमालिका धरं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥ ७॥

भूतसंघ नायकं विशालकीर्ति दायकं
काशिवास लोकपुण्यपाप शोधकं विभुम् ।
नीतिमार्ग कोविदं पुरातनं जगत्पतिं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥ ८॥

॥ फल श्रुति॥

कालभैरवाष्टकं पठंति ये मनोहरं
ज्ञानमुक्ति साधनं विचित्र पुण्य वर्धनम् ।
शोकमोह दैन्यलोभ कोपताप नाशनं
प्रयान्ति कालभैरवांघ्रिसन्निधिं नरा ध्रुवम् ॥

॥इति कालभैरवाष्टकम् संपूर्णम् ॥

pdfinbox.com